RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 10
सृष्टि संवत् 1960853114
9 जून 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-70, अंक : 10, 6/9 जून 2013 तदनुसार 27 ज्येष्ठ सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

अथ मर्त्यो-ऽमृतो भवति

-ले० आचार्य भद्रसेन 182, शालीमार नगर, होशियारपुर

नि:सन्देह किसी देह की मृत्यु अवश्यम्भावी है। इस लिए वह पूरी तरह से हटाई नहीं जा सकती। यह एक अटल नियम है कि संसार में 'जातस्य ध्रुवो मृत्यु:' (गीता 2, 27) अर्थात् जो पैदा होता है, वह एक दिन अवश्य ही मरता है, जो बनता है, वह बिगड़ता है। हां अवश्यम्भावी मृत्यु को परे अवश्य धकेला जा सकता है। जैसे कि दुनियावी कारोबार और चिकित्सा शास्त्र के प्रयासों से स्पष्ट हो रहा है। इस बात को समझने का एक सुन्दर उदाहरण बर्फ है। बर्फ का स्वभाव पिघलना है, यदि उसको चूर-चूर कर दिया जाता है, तो वह बहुत जल्दी पिघल जाती है, सिल्ली के रूप में रहे, तो देर से पिघलती है, उसी बर्फ को बोरी में या भूसे में रखते हैं तो पहले की अपेक्षा देर से पिघलती है। यदि उसी बर्फ को आईस बाक्स में रखते हैं, तो वह और भी अधिक देर से पिघलती है। इसी प्रकार चिकित्सा विज्ञान के विविध उपायों द्वारा अवश्यम्भावी मृत्यु को कुछ समय के लिए परे धकेला जा सकता है और उतने अधिक समय तक जीवन में अधिक अच्छे कार्य करके इस अवसर का लाभ उठाया जा सकता है। तभी तो आयुर्वेद में ऐसी अनेक औषधियां हैं, जिनसे दीर्घ जीवन की उपलब्धि होती है।

आज की चर्चा कुछ लम्बी अवश्य होती जा रही है, पर अमृत के रहस्य को स्पष्ट करने के लिए सत्संग की समाप्ति से पूर्व में सभी श्रोताओं का ध्यान कठोपनिषद के दो मन्त्रों की ओर ले जाना चाहता हूं। उन दोनों में कहा है-

'अथ मर्त्योऽमृतो भवति'-जब हृदय में रहने वाली सारी कामनाएं और हृदय की गाठें खुल जाती हैं, छूट जाती हैं। तब मनुष्य अमृत हो जाता है। यही अमृतत्व का निचोड़ है[1], अर्थात्, हम शारीरिक, पारिवारिक, सामाजिक, सांसारिक कामनाओं से उभर कर जितना-जितना आत्मिक विकास, आत्मानुभूति के लिए प्रयास करते हैं, उतना-उतना अमर हो जाते हैं।

आत्मानुभूति की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए बृहदारणयक उपनिषद में कहा है-जब कोई अपने आप को जान लेता है, कि मेरा अपना यह रूप है, तो फिर वह किस प्रकार कौन सी इच्छा को लेकर केवल शरीर तक सीमित रहता है और न ही शरीर के अनुरूप तड़पता है।[2]

यदि मानव जीवन जीवित रहते-रहते कोई अपने आप को समझ लेता है, तो वह बड़े लाभ में रहता है अर्थात् अपने मानव जीवन को सार्थक कर लेता है और जो ऐसा नहीं करता, वह बड़े घाटे का सौदा करता है। जो आत्मानुभूति कर लेते हैं, वे अमृत (सुखी) होते हैं और दूसरे दुखी होते हैं।[3]

आत्मानुभूति सम्पन्न व्यक्ति ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होता है। वह किसी विपरीत स्थिति में भी उदास, हताश, निराश नहीं होता। ऐसी भावनाएं उसके जीवन में आती तो हैं पर हावी नहीं होती, अपितु हर समय उसके अन्दर आशा, विश्वास और उत्साह उभरते रहते हैं। इसी स्थिति का चित्रण करते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'मेरा जीवन' नामक कविता में कहा है-

'उत्साह उमंग निरन्तर, रहते मेरे जीवन में।'
उल्लास विजय का हंसता, मेरे मतवाले मन में॥
आशा आलोकित करती, मेरे जीवन के प्रतिक्षण।
हे स्वर्णसूत्र से वलयित, मेरी असफलता के धन॥
सुख भरे सुनहले बादल, रहते हैं मुझ को घेरे।
विश्वास प्रेम साहस हैं, जीवन के साथी मेरे॥'

संसार के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह जीवन का सामान्य कार्य हो, या संघर्ष, स्पर्धा, प्रतियोगिता या परीक्षा का अवसर। इन सभी में किसी की विजय का आधारभूत मूल तत्व है-आत्मबल। अतएव अर्जुन के आत्मबल को जगाने के लिए गीता के दूसरे अध्याय में जहां आत्मा के स्वरूप का निरूपण किया है, वहां आगे एतदर्थ बार-बार योग की प्रक्रिया का प्रतिपादन किया है। अत: शारीरिक आहार की तरह आत्मिक आहार के लिए सजग होना चाहिए।

आज सत्संग से पूर्व अमृतानन्द जी से योग की चर्चा चल रही थी। पारस्परिक विचार-विमर्श से हम दोनों इस परिणाम पर पहुंचे, कि योगदर्शन के समालोचनात्मक अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट होती है, कि योग की प्रक्रिया द्वारा आत्मानुभूति होती है। तभी तो वहां कहा है[1]-जब योग की विधि के अनुष्ठान से चित्त की वृत्तियां निरुद्ध हो जाती हैं। अर्थात् अपने काबू में आ जाती हैं। तब चित्त के द्रष्टा (संसार के अनेकविध दृश्यों को देखने वाले) जीवात्मा का अपने स्वरूप में टिकाव होता है। योगदर्शन में द्रष्टा, दृश्य शब्दों का विवेचन किया गया है, उस विवेचन में जीव के लिए द्रष्टा शब्द आया है।[2] क्योंकि द्रष्टा केवल दर्शन क्रिया का कर्ता होते हुए भी काम, क्रोध, लोभ, मोह जैसे प्रत्ययों, अनुभवों, ज्ञानों, आवेगों के अनुरूप ही उस-उस स्थिति में क्रोधी, लोभी आदि के रूप में दृष्टिपथ होता है। (शेष पृष्ठ 6 पर)

1. यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा येऽस्य हृदि श्रिता:।
अथ मर्त्योऽमृतो भवति-अत्र ब्रह्म समश्नुते॥ 6, 14
यदा सर्वे प्रमिद्यन्ते हृदयस्येह ग्रन्थम:।
अथ मर्त्योऽमृतो भवति-एतावद् ह्यनुशासनम्॥ 6॥
2. आत्मानं चेद् विजानीयादयमस्मीति पुरुष:।
किमिच्छन्कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत्॥ 4, 4, 12॥
आन्वीक्षिक्यात्मविज्ञानाद्धर्षशोकौ व्युदस्यति शुक्रनीति। 1, 158
3. इहैव सन्तोऽथ विध्मस्तद् वयं न चेदवेदी र्महती विनष्टि:।
ये तद् विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे दु:खमेवापि यन्ति। बृह. उप. 4,4,14
4. तदा द्रष्टु: स्वरूपेऽवस्थानम् योग। 1, 3
5. द्रष्टा दृशिमात्र: शुद्धोऽपि प्रत्ययानुपश्य:। 2, 20

नारी के अतीत व वर्तमान का सामाजिक व चारित्रक स्वरूप

-श्री पंडित उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक, उत्तराखंड

आर्य समाज के संस्थापक, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी की शिक्षा व उच्च चरित्र पर बहुत बल दिया है। उन्होंने अपने ग्रन्थों में स्पष्ट किया है कि नारी परिवार व समाज की रीढ़ की हड्डी होती है और परिवार समाज व राष्ट्र में नारी की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। नारी का रहन-सहन पहनावा व वेशभूषा तथा संस्कारों का समाज पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है।

आर्य समाज ने अपने जन्म काल में नारी शिक्षा सुधार में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। शोषित व ताड़ित नारियों के उज्जवल भविष्य के लिए आर्य समाज ने पहल की। फलस्वरूप आज के युग में नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के बराबर कार्य कर रही है। आज की नारी राष्ट्रपति तक के पदों को सुशोभित कर रही है। राजनीति, विज्ञान, शिक्षा व सामाजिक क्षेत्र में नारी ने अपना परचम लहराया है यह सब आर्य समाज की नारी के प्रति पहल करके शिक्षा का प्रभाव है।

आज आर्य समाज बहुत चिन्तित है कि वर्तमान में समाज का चरित्र नारी के प्रति क्यों गिर रहा है। क्यों घृणित बलात्कार करके मानवता को शर्मसार कर रहे हैं, अबोध बालिकाओं तक का बलात्कार हो रहा है। क्यों समाज का इतना नैतिक पतन हो रहा है, इस विकट समस्या पर हमें गम्भीरता से विचार करना पड़ेगा और सुधार के लिए आर्य समाज को आन्दोलित होना पड़ेगा। कुछ अतीत मध्य व वर्तमान में नारी की समस्या पर विचार करते हैं।

वैदिक युग में नारी की स्थिति- वैदिक युग में नारी की बहुत ऊंची स्थिति थी, परिवार में नारी को देवी कहा जाता था। अथर्ववेद में कुल वधु को सम्बोधित करके कहा गया है।

साम्राज्ञी एधि श्वसुरेषु सम्राज्ञी उत देवृषु।

ननान्दुः सम्राज्ञी एधि सम्राज्ञी उतश्वश्रुवा॥।

अर्थात् हे कुलवधु तू जिस नवीन घर में जाने वाली है तू वहां की सम्राज्ञी है, वहां तेरा राज होगा। तेरे श्वसुर देवर, ननदे और सास तुझे सम्राज्ञी समझेंगे।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता : जहां नारियों को सम्मान व पूजा होती है वहां देवता रमते हैं। वैदिक युग में नारियों को ऊंची से ऊंची शिक्षा दी जाती थी। नारियों में उच्च संस्कार आत्मरक्षा पतिव्रत धर्म सदाचार, पवित्रता, शालीनता, सहनशीलता नारी सुलभ लज्जा आदि के विशेष गुण थे। यही कारण है कि वैदिक युग में नारी ऋषिकाएं तथा शास्त्रार्थ महारथी हुई थी और सम्पूर्ण मानव समाज में एक उच्च चरित्र की आदर्श संहिता थी। नारी पुरुष दोनों अपनी-अपनी मर्यादा में रहते थे।

वैदिक युग में कन्या का विवाह युवावस्था में होता था, वैदिक काल का विवाह स्वयंवर के सिद्धान्त पर आश्रित था। स्वयंवर का अर्थ है- स्वयं अपने आप वरण करना और स्वयंवर का अधिकार कन्या को दिया जाता था, वर कन्या को माला नहीं पहनाता था, कन्या जिस वर के प्रति स्वीकृति देती थी उसके गले में माला डालती थी। सीता स्वयंवर हुआ द्रौपदी का स्वयंवर हुआ अन्तिम स्वीकृति कन्या की थी वर की नहीं थी। वैदिक युग में दहेज जैसी कोई बात नहीं थी किन्तु विवाह के समय कन्या के माता पिता वर को कुछ वस्त्र कुछ आभूषण देते थे ताकि वह गृहस्थी चला सके। विवाह के समय वर को गौ देते थे ताकि उन्हें दूध, दही मिल सके, अगर वैदिक युग में कन्यापक्ष की तरफ से कुछ दिया जाता था तो गौ तथा अलकृंत कन्या। इस प्रकार वैदिक युग में नारी का स्थान बहुत ऊंचा था।

मध्य युग में नारी की स्थिति- मध्य युग के आते-आते नारी के प्रति दृष्टिकोण बदल गया और इतना बदला कि स्त्री की पूर्ण अधोगति का युग था। इस युग में स्त्री को मौलिक व सामाजिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया था।

स्त्री शुद्रौ नाधीयताम-यह कहा जाने लगा। तुलसीदास ने तो यहां तक लिख डाला कि ढोल, गंवार, शूद्र, पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी-स्त्री को गंवार मूर्ख गिना जाने लगा। स्त्री को लूट का अंग माना जाने लगा और कन्याओं को अपहरण से बचाने के लिए उसे घर के भीतर छिपा कर रखा जाने लगा। ऐसी हालत में शिक्षा कहां हो सकती थी ? कन्याओं को अशिक्षित रहना समय की मांग हो गई। कहा जाता है कि मुसलमानों के आक्रान्ता के रूप में भारत आने से बाल विवाह की प्रथा चल पड़ी और छोटे बच्चे बच्चियों का विवाह होने लगा। इस प्रकार दहेज की प्रथा भी बढ़ गई जो जितना अधिक दहेज देता था कन्या को उतना ही सुखी माना जाता था।

भारत के मध्यकालीन युग में स्थिति बहुत बदल गई, समाज में नई-नई समस्याएं उत्पन्न हो गईं। अगर किसी स्त्री के पति का देहान्त हो जाए तो भारत में उसके सामने दो मार्ग थे या तो आजीवन विधवा रहे या पति के साथ चिता में भस्म हो जाए। इस काल में सती प्रथा के काल तक विधवाओं की जो दुर्दशा की जाती रही वह बहुत भयंकर काल था। विधवा होते ही नारी का सिर मुंड दिया जाता था। लज्जा के मारे वह बाहर नहीं निकल सकती थी। उसे अपशकुन का कारण समझा जाने लगा। विधवा के लिए ऐसी विकट स्थिति पैदा की जाती थी। उसके सामने सति होना ही एक मार्ग रह जाता था।

इस प्रकार नारी जाति के ऊपर मध्य युग में उत्पीड़न, शोषण, अत्याचार, अन्याय, अपमान व केवल भोग की वस्तु समझकर सर्वाधिक अत्याचार हुआ।

वर्तमान युग में स्त्री की स्थिति- आज की नारी ने अपने पिछले बन्धनों को तोड़ दिया है। वह हर क्षेत्र में पुरुषों के स्तर पर आ रही है। अंग्रेजों का शासन आया। 1823 में अंग्रेज़ी शासन ने एक कमेटी बनाई जिसका उद्देश्य इस देश में शिक्षा का प्रचार करना था। 1835 में लार्ड मैकाले को भारतीय शिक्षा पर विचार करने वाली सोसायटी का सदस्य बनाया गया। उसने यह निश्चित मत व्यक्त किया कि भारत में ऐसी शिक्षा प्रणाली का सूत्रपात करना उचित है जिससे भारतीय वेशभूषा में तो भारतीय हो किन्तु अन्दर से अंग्रेज़ हो और इस योजना पर लार्ड मैकाले बहुत सफल रहा है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण वर्तमान में दिखाई दे रहा है। इसका परिणाम यह हुआ कि कन्याओं को घर की चार दीवारी से निकल कर शिक्षा प्राप्त करने का वैसा ही अवसर प्राप्त होने लगा जैसे युवकों को प्राप्त हो रहा था और लड़कों के साथ-साथ लड़कियों के स्कूल कालेज भी खोले जाने लगे।

सन् 1977 में सरकार ने कन्या के लिए 18 वर्ष व वर के लिए 21 वर्ष आयु विवाह के लिए तय कर दी है। इससे भी कन्याओं को शिक्षा का अवसर मिलने लगा। नारी के सामाजिक विचारों व संस्कारों में वैदिक युग व मध्ययुग की तुलना में अधिक स्वतन्त्र विचारधारा बनने लगी, परिणामस्वरूप नारी ने जहां पुरुषों की हर क्षेत्र में बराबरी की है वहीं कहीं न कहीं नारी ने सुलभ लज्जा का परित्याग भी किया है। पाश्चात्य संस्कृति व सभ्यता की अन्धी दौड़ में नारी ने अपने संस्कारों के उच्च आदर्शों की बलि देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। सिनेमा जगत में, कल्बों में आदि-आदि जगहों पर नारी अर्धनग्न रूप में अपने शरीर का प्रदर्शन कर रही है। सिनेमाओं में देखने में आता है कि पुरुष तो पूरे कपड़े पहना होता है पर नारी के वस्त्र आधे होते हैं। समाज पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। ऐसा लगता है सामाजिक संस्थाएं भी इस पर मौन रूप से स्वीकृति दे रही हैं। महिला संगठन इस पर कुछ नहीं कहते हैं।

नारी के अति स्वतन्त्र होना नारी की मर्यादाओं से बाहर जाना है इस पर विचार करना होगा। अर्धनग्न प्रदर्शन को रोकने के लिए सरकार को सख्त कानून बनाना चाहिए। शिक्षा क्षेत्र में कालेज व स्कूलों में लड़कों व लड़कियों का अलग-अलग स्कूल होना चाहिए। पाश्चात्य संस्कार वेलेंट डे पर भी प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।

दहेज के दुष्परिणामों का मुकाबला करने के लिए समाजिक संस्थाओं व कानून द्वारा सख्ताई से पालन करना होगा। आर्य समाज व अन्य संस्थाओं ने इस दिशा में बहुत कार्य किया है। 1959 में दहेज निरोधक अधिनियम भी पास हो चुका है जिसके अनुसार दहेज मांगने वाले को 6 मास की सजा व 5 हजार रुपए जुर्माना किया जा सकता है। इसी प्रकार विधवा की स्थिति में भी कोई मान्यता प्राप्त परिवर्तन नहीं हुआ है।

अन्त में सरकार से सामाजिक संगठनों से, राजनेताओं से, महिला संगठनों से शिक्षा विदों से व सामान्य महिलाओं से विनम्र निवेदन है कि वर्तमान में चरित्र हनन की जो भी घटनाएं हो रही है इसको समाज के संस्कारों में छोटा न समझे। अगर इस विकट समस्या पर हम जागरुक नहीं हुए तो कालान्तर में ये समस्या कैंसर जैसा लाइलाज बन सकती है। केवल कानून बनाने से ही समस्या का समाधान नहीं होगा हमें समस्या के मूल की तह तक जाना होगा। विशेष करके आर्य समाज जैसे जागरुक संगठन को इसमें आगे आना होगा।

नोट-इस लेख में कुछ विचार प्रोफैसर सत्यव्रत सिद्धान्तकार जी द्वारा लिखित पुस्तक वैदिक संस्कृति की रक्षा से लिए गए है।

सम्पादकीय.....

राष्ट्र का उत्थान कौन कर सकता है ?

चरित्र के विकास के लिए इच्छा शक्ति का होना आवश्यक है। जो व्यक्ति कमजोर होता है उसमें इच्छा शक्ति का अभाव होता है। अत: वह दुर्बल चरित्र होता है। जो एक निश्चय करके उस पर स्थिर नहीं रह सकता, जिसका कोई स्थाई सिद्धान्त नहीं है, जिसकी अपनी कोई रूचि नहीं, उसके पास चरित्र का अभाव ही समझना चाहिए। ऐसे पुरूष अच्छे कार्य करने में अक्षम होते हैं। ऐसे मनुष्यों से समाज का क्या हित होगा? वे अपना ही कल्याण नहीं कर सकते। एक चरित्रवान व्यक्ति बनने के लिए दृढ इच्छा शक्ति का होना बहुत आवश्यक है। बालकों को अपना निश्चय स्वयं करने देना चाहिए। जो बालकों को आत्म निर्णय करने का अवसर नहीं देते, वे उनके चरित्र विकास में बड़े बाधक होते हैं।

हठधर्मी भी दृढ इच्छा शक्ति का ही एक स्वरूप है। किन्तु हमारा अभिप्राय हठधर्मी को प्रोत्साहित करने का नहीं है। हमारा अभिप्राय उन हालातों से है जहां पर या तो व्यक्ति कुछ निश्चय कर ही नहीं पाता या अपनी इच्छा शक्ति की दुर्बलता के कारण झूठे दबाव में आकर अपना इरादा बदल देता है। हीनता की भावना के कारण जो अपने निश्चय पर स्थिर नहीं रह सकता, उसका व्यक्तित्व एवं चरित्र व्यर्थ है। वह कल क्या करेगा? कोई नहीं कह सकता। उसके चरित्र में कोई स्थायित्व नहीं और स्थायी व्यक्तित्व ही चरित्र की विशेषता है। जो चरित्रवान होता है वह अपने उचित निर्णय पर अड़िग रहता है।

संसार में तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं- उत्तम, मध्यम और निम्न। निम्न व्यक्ति विघ्नों के भय से किसी कार्य को आरम्भ ही नहीं करते। मध्यम प्रकार के व्यक्ति कार्य को आरम्भ तो कर देते हैं परन्तु विघ्न आने पर उस कार्य को बीच में ही छोड़ देते है। उत्तम श्रेणी के व्यक्ति कार्य को प्रारम्भ करके तब तक नहीं छोडते जब तक कार्य की सिद्धि नहीं हो जाती। उत्तम प्रकार के व्यक्तियों की इच्छाशक्ति प्रबल होती है। इस इच्छा शक्ति के आधार पर ही वे संसार में महान कार्य कर जाते हैं और अमर हो जाते हैं। इच्छाशक्ति एक बहुत बड़ी ताकत है अंग्रेजी में एक कहावत प्रसिद्ध है- जहां इच्छा होती है वहां राह निकल आती है। जिस परिस्थिति में बहुत बडी शारीरिक शक्ति से सम्पन्न किन्तु दुर्बल इच्छा शक्ति के कारण घबरा जाते हैं। वहां इच्छा शक्ति के प्रभाव से ही दुर्बल मनुष्य अचल होकर खड़ा रहता है। महाराणा प्रताप, शिवाजी, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी आदि इच्छा शक्ति के आधार पर कार्य करके महान बन गए।

यह इच्छाशक्ति है क्या? यह मनुष्य की कोई मूल शक्ति है अथवा इसका जन्म अकस्मात् हो जाता है और प्रबल विपत्तियों से टकराने की विलक्षण शक्ति इसमें कहां से आ जाती है। जीवन में अनेक अवसर आते हैं जब हमारे सामने निर्णय लेना कठिन हो जाता है और हमें कोई एक मार्ग चुनना होता है। हम तब एक अनिश्चय की दशा में होते हैं। क्या करें, क्या न करें यह हमारी समझ में नहीं आता। हम सोचते हैं, विचारते हैं, सभी प्रकार की उक्तियों का सहारा लेते हैं और तब अन्तर्द्वन्द्व के पश्चात किसी एक निर्णय पर पहुंचते हैं। यह निर्णय हमारी इच्छा शक्ति करती है।

युद्ध के लिए तैयार अर्जुन के सम्मुख ऐसा ही अवसर उपस्थित हुआ था। उसके सम्मुख प्रश्न था कि वह युद्ध करके आत्मीयों की हत्या करें अथवा आत्मीयता के मोह में पडकर अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाए। सोचा समझा, श्रीकृष्ण से उपदेश लिया और अन्त में अन्तर्द्वन्द्व के पश्चात निश्चय किया कि मैं युद्ध में भाग लेकर अपने क्षात्र धर्म का पालन करूंगा। इस निर्णय में यह मैं शब्द विशेष महत्व है। इस निर्णय की प्रेरणा तथा कार्यान्वित करने की प्रबल शक्ति इस मैं शब्द में ही छिपी हुई है।

उज्जवल चरित्र के लिए इच्छा शक्ति की बहुत जरूरत है। जो व्यक्ति दृढ निश्चय नहीं कर पाता, जो अपने किसी काम पर अडिग नहीं रहता, उसका व्यक्तित्व प्रभावहीन हो जाता है तथा चरित्र दुर्बल होता है। मनुष्य का विगत जीवन एवं भावी योजनाएं जिस आदर्श स्व को बताती हैं, इच्छा शक्ति उसी की प्रबल प्रेरणा को कहते हैं। शिक्षकों को चाहिए कि बालकों को आत्मनिर्णय का अवसर दें, जिससे उनकी इच्छा शक्ति दृढ हो सके। आज देश के नवयुवक विज्ञान, इन्जीनियरिंग, कृषि आदि सभी क्षेत्रों में उन्नति कर रहे हैं, परन्तु दुर्भाग्यवश चारों ओर भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी और बेईमानी का राज है। अनेक प्रकार की बुराईयों में देश जकड़ा हुआ है। बलात्कार आदि घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं। देश तेजी से पतन की ओर जा रहा है। कभी इस देश के राजा बड़े गर्व से घोषणा करते थे कि- मेरे देश में न कोई चोर है, न कोई शराबी है, न जुआरी है और न ही कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके घर में यज्ञ न होता हो। व्यभिचारी पुरूष ही नहीं तो स्त्रियां कहां से होंगी। परन्तु आज परिस्थितियां बदल चुकी हैं। देश में अनाचार, भ्रष्टाचार, आदि अनेक बुराईयां फैल चुकी हैं। देश की इन परिस्थितियों को देखते हुए मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियां याद आती हैं-

हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आओ मिलकर विचारे आज ये समस्याएं सभी।।

इस सबका एक ही कारण है कि नवयुवकों के चरित्र निर्माण की ओर किसी का ध्यान नहीं है। हम एक ऐसा देश बना रहे हैं जिसकी नींव रेत के ढ़ेर पर खड़ी है और यह नींव कभी भी ढह सकती है। एक अंग्रेजी की प्रसिद्ध कहावत है कि- यदि धन गया तो कुछ नहीं गया, यदि स्वास्थ्य गया तो समझो कुछ हानि हुई, परन्तु यदि चरित्र चला गया तो समझो सब कुछ नष्ट हो गया। अत: आज देश के गिरते हुए नैतिक स्तर को उठाने के लिए बालकों को उच्च चरित्रवान बनाना परमावश्यक है और यह तभी सम्भव है जबकि माता, पिता और गुरू मिलकर बालकों का निर्माण करें क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि-मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरूषो वेद: इसलिए इन तीनों का कर्त्तव्य है कि बालकों की इच्छा शक्ति को दृढ करें क्योंकि बिना दृढ इच्छा शक्ति के उच्च चरित्र नहीं बन सकता और उच्च चरित्र के बिना राष्ट्र का उत्थान नहीं हो सकता। अगर हम अपने देश को उन्नत, खुशहाल, और भ्रष्टाचार के रावण से मुक्त देखना चाहते है तो हमें युवा पीढ़ी को चरित्रवान, सभ्य, श्रेष्ठ संस्कारों से परिपूर्ण करना होगा क्योंकि युवा पीढ़ी ही देश का भविष्य है, यही पीढी राष्ट्र का उत्थान कर सकती है। अत: राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिए बालकों को उच्च चरित्र की शिक्षा दें ताकि वे देश का भविष्य बन सकें।

-प्रेम भारद्वाज सम्पादक एवं सभामहामंत्री

आर्य सी.सै.स्कूल लुधियाना का परीक्षा परिणाम

आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल लुधियाना का बारहवीं कक्षा का परिणाम बोर्ड द्वारा घोषित किया गया जिसमें आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल लुधियाना के आर्टस, कामर्स और साईंस ग्रुप का परिणाम बहुत ही अच्छा रहा। साईंस ग्रुप में कुल 37 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी जिसमें 35 विद्यार्थी पास हुये। इसी तरह कामर्स ग्रुप में 162 विद्यार्थी परीक्षा में बैठें जिनमें 155 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुये। आर्ट्स में 134 विद्यार्थी परीक्षा में बैठे और सभी विद्यार्थी उत्तीर्ण हुये। स्कूल प्रिंसीपल श्री विजय पाल दयौड़ा ने अच्छे परिणाम के लिए विद्यार्थियों की सराहना की और उनके अच्छे परिणाम के लिये सभी अध्यापकों का धन्यवाद व्यक्त किया। स्कूल के मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी एवं प्रधान श्री आशानन्द जी आर्य ने अध्यापकों की मेहनत के लिये उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की तथा भविष्य में भी उनके अच्छे परिणामों के लिये प्रेरित किया।

-श्रीमती विनोद गांधी मैनेजर

वेद विज्ञान

-ले० शिव नारायण उपाध्याय-73 शास्त्री नगर, दादाबाड़ी-कोटा

ऋग्वेद संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ होने के साथ साथ विज्ञान का भी आगार हैं। इसमें विज्ञान की प्रत्येक शाखा पर अकुंरवत् वर्णन तो हैं ही परन्तु ऐसे संकेत भी इसमें विज्ञान की खोज संबन्धित मिलते हैं जिन पर वर्तमान में कार्य चल रहा हैं। सृष्टि उत्पति के क्रम में हम यह जानते ही हैं कि आकाश के बाद वायु ज्वलनशील गैस ही उत्पन्न होती है। वायु का प्राणी जगत् के जीवित रहने में मुख्य हाथ है। वास्तव में वायु, जल, ताप एवं पृथ्वी पर उत्पन्न नाना प्रकार की वनस्पति फल-फूल सभी मिल कर ही हमें जीवित रख पाते हैं। इसलिए ऋग्वेद में प्रारम्भ से ही इनके विषय में ही बताया गया हैं। चूंकि वेद ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हैं तथा उसे सृष्टि का बनाने और धारण करने वाला मानते हैं इसलिए ईश्वर के गुण, कर्म, और स्वभाव का वर्णन भी साथ-साथ ही चलता रहता हैं। ऋ.. 1.6. 7 में कहा गया है कि ईश्वर ने जो अपनी व्याप्ति और सत्ता से सूर्य और वायु आदि पदार्थ बनायें हैं उन सब पदार्थों में सूर्य और वायु दोनों मुख्य हैं क्योंकि इन्हीं के धारण आकर्षण और प्रकाश के योग से सब पदार्थ सुशोभित होते हैं। मनुष्यों को चाहिए कि पदार्थ विद्या से उपकार लेने के लिए इन्हें युक्त करें। यदि सूर्य को ताप का मुख्य स्रोत माने तो पदार्थ के गुण दोष जानने में ताप के अभाव में कुछ भी ज्ञात नहीं कर सकेंगे। हर प्रयोग पर वायु का प्रभाव भी पड़ता ही हैं। वायु लगातार गति में रहता है साथ ही वायु ध्वनि का माध्यम भी है। वायु के अभाव में ध्वनि का गमन कैसे होगा ? हमारे शब्द उच्चारण करने में भी वायु का हाथ होता हैं।

परिज्मन्नागहि दिवो वा रोचना दधि। समस्मिन्नृञ्जते गिरः।

ऋ.. 1.6.9

पदार्थ-जिस वायु में वाणी का सब व्यवहार होता है, वह (परिज्मन्) सर्वत्र गमन करता हुआ सब पदार्थों को तले ऊपर पहुँचाने वाला पवन (अतः) इस पृथ्वी स्थान से जलकणों को ग्रहण करके (अध्यागहि) ऊपर पहुँचाता और फिर (दिवः) सूर्य के प्रकाश से (वा) अथवा (रोचनात्) जो कि रूचि को बढ़ाने वाला मेघ मण्डल है उससे जल को गिराता हुआ तले पहुँचाता है (अस्मिन्) इसी बाहर और भीतर रहने वाले पवन में सब पदार्थ स्थिति को प्राप्त होते हैं।

भावार्थ-यह बलवान वायु अपने गमन आगमन बल से सब पदार्थों के गमन आगमन तथा शब्दों का उच्चारण और श्रवण का हेतु हैं।

अगली ऋचा में कहा गया हैं कि सूर्य किरणें पृथ्वी में स्थित हुए जलादि पदार्थों को भिन्न-भिन्न करके बहुत छोटे-छोटे कर देती हैं, इसी से वे पदार्थ हलके होकर पवन के साथ ऊपर को चले जाते हैं क्योंकि यह सूर्य सब लोकों से बड़ा है तथा उसका आकर्षण भी अधिक हैं।

ऋ. 1. 15.2. में कहा गया है कि ऋतुओं के अनुक्रम से पवनों में भी यथायोग्य गुण उत्पन्न होते हैं, इसी से वे त्रस रेणु आदि पदार्थों वा क्रियाओं के हेतु होते हैं तथा अग्नि के बीच में सुगन्धित पदार्थों के होम द्वारा पवित्र होकर प्राणी मात्र को सुख देते हैं और वे ही पदार्थों के देने लेने में हेतु होते हैं।

युवं दक्षं धृतव्रत मित्रा वरूण दूलभम्। ऋतुनायज्ञमाशाये।

ऋ. 1.15.6

भावार्थ-जो सबका मित्र बाहर आने वाले प्राणी तथा शरीर के भीतर रहने वाला उदान है, इन्हीं से प्राणी ऋतुओं के साथ संसार रूपी यज्ञ और बल को धारण करके व्याप्त होते हैं जिससे सब व्यवहार सिद्ध होते हैं।

ऋग्वेद 1.19.4 में कहा गया है कि जितना बल वर्तमान है उतना वायु और विद्युत के सकाश से उत्पन्न होता हैं। इससे वायु के गुणों को जानना वा उनसे उपकार ग्रहण करने से अनेक प्रकार के कार्य सिद्ध होते हैं। वायु यज्ञ के द्वारा शुद्ध, पवित्र, सुगन्धित एवं रोगनाशक बनती है इसके विपरीत सड़ी गली वस्तुओं से वायु दुर्गन्धित तथा अस्वास्थ्यकर होती हैं। यज्ञ से गरम होकर वायु फैलती और हल्की भी हो जाती है।

ये शुभ्रा घोरवर्यसः सुक्षत्रासो रिशादसः। मरूद्भिरग्न आगहि।

ऋ . 1.19.5

भावार्थ-जो यज्ञ के धूम से शुद्ध हुए पवन हैं वे अच्छे राज्य के कराने वाले होकर रोगादि दोषों का नाश करते हैं और जो अशुद्ध अर्थात् दुर्गन्ध आदि दोषों से भरे हुए हैं वे सुखों का नाश करते हैं। इससे मनुष्य को चाहिए कि अग्नि में होम द्वारा वायु की शुद्धि से अनेक प्रकार के सुखों की सिद्धि करें।

ऋग्वेद 1. 19. 7 में कहां गया है कि वायु के संयोग से ही वर्षा होती है और जल के कण वा रेणु अर्थात् सब पदार्थों के छोटे-छोटे कण पृथ्वी से अन्तरिक्ष को जाते तथा वहाँ से पृथ्वी को आते हैं। उनके निमित्त से ही बिजली पैदा होती है।

ताम हान्ता सरस्वती इन्द्राग्नी रक्ष उज्जतम्। अप्रजाः सन्त्वत्रिणः।

ऋ . 1.21.5.

विद्वानों को योग्य है कि जो सब पदार्थों के स्वरूप वा गुणों से अधिक वायु और अग्नि है अतः उनको अच्छी प्रकार जानकर क्रिया व्यवहार में संयुक्त करें तो वे दुःखों का निवारण करके अनेक प्रकार की रक्षा करने वाले होते हैं।

ऋग्वेद 1.23.7 में बताया गया है कि वायु के न होने पर अग्नि नहीं जल सकती हैं।

मरूत्वन्तं हवामहे इन्द्रमा सोमपीतये। सजूर्गणेन तृम्पतु।

ऋ.. 1.23.7

भावार्थ-इस मन्त्र में वाचक लुप्तोपमालंकार हैं। मनुष्यों को योग्य है कि जिस सहायकारी पवन के बिना अग्नि कभी भी प्रज्वलित होने को समर्थ नहीं और उक्त प्रकार बिजली रूप अग्नि के बिना किसी भी पदार्थ की बढ़ती का सम्भव नहीं हो सकता।

इन्द्रज्येष्ठामरूद्गण देवासः पूषरातयः। विश्रवे मम श्रुता हवम्।

ऋ . 1.23.8

भावार्थ-कोई भी मनुष्य जिन पवनों के बिना कहना, सुनना और पुष्ट होना आदि व्यवहारों को प्राप्त होने को समर्थ नहीं हो सकता। जिनके मध्य में सूर्य लोक सबसे बड़ा विद्यमान, जो इसके प्रदीपन कराने वाले हैं जो सूर्य लोक अग्नि रूप ही है जिन और जिस बिजली के बिना कोई भी प्राणी अपनी वाणी के व्यवहार करने में समर्थ नहीं हो सकता। इन सब पदार्थों की विद्या को जानकर मनुष्य को सदा सुखी होना चाहिए।

ऋग्वेद मंडल। सूक्त 38 में पवन के दो रूपों की चर्चा इस प्रकार है-

मो षुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणा वधीत। पदीष्ट तृष्णयासह।

ऋ . 1.38.6

भावार्थ-पवनों की गति दो प्रकार की होती है एक सुख दायक और दूसरी दुःख दायक। उनमें से जो उत्तम नियमों से सेवन की हुई रोगों का हनन करती हुई शरीर आदि के सुख का हेतु है वह प्रथम और जो खोटे नियम और प्रमाद से उत्पन्न हुई क्लेश, दुःख और रोगों को देने वाली वह दूसरी, इन्हीं के मध्य में से मनुष्यों को अति उचित है कि परमेश्वर के अनुग्रह और अपने पुरूषार्थ से पहली गति को उत्पन्न करके दूसरी गति का नाश करके सबकी उन्नति करनी चाहिए और जो पिपासा आदि धर्म है वह वायु के निमित्त से तथा जो लोभ का वेग है वह अज्ञान से उत्पन्न होता हैं।

अगले मन्त्र में कहा गया है कि अन्तरिक्ष में रहने वाले तथा सत्वगुण और स्वभाव वाले पवन पुष्टि के हेतु हैं, स्वास्थ्य के लिए उपयोगी हैं उन्हीं का युक्ति पूर्वक सेवन करना चाहिए इससे शरीर को सुख प्राप्त होगा। युक्ति रहित दुर्गन्धित वायु प्रतिकूल होकर दुःख दायक होगी।

मरूतो वीलुपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु यातेमखि द्रयामसि।

ऋ . 1. 38.11

भावार्थ-पवनों के गमन बल और व्यवहार होने के हेतु स्वाभाविक धर्म है और ये निश्चय करते हुए नदियों को चलाने वाले, नाड़ियों के मध्य में गमन करते हुए रूधिर रसादि को शरीर के अवयवों को प्राप्त करते हैं इस कारण योगी लोग योगाभ्यास और अन्य मनुष्य बल आदि के साधन रूप वायुओं से बड़े-बड़े उपकार ग्रहण करें।

वृष्णेशर्द्धाय सुमखाय वेधसे नोधः सुवृक्ति प्रभरा मरूद्भयः।

अपोनधीरोमनसा सुहस्त्यो गिरः समञ्चे विदथेष्वाभुवः।

ऋ. 1. 64.1

भावार्थ-मनुष्यों को चाहिए कि जितनी चेष्टा, भावना, बल, विज्ञान, पुरूषार्थ धारण करना, छोड़ना, कहना, सुनना, बढ़ना, नष्ट होना, भूख, प्यास आदि हैं वे सब वायु के निमित्त से ही होते हैं। जिस प्रकार इस विद्या को मैं जानता हूँ वैसे तुम भी ग्रहण करो।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

यह जवानी किधर जा रही है

-ले० डा. एच. कुमार कौल डायरैक्टर-गांधी आर्य सी. सै. स्कूल, बरनाला

युवा विद्यार्थियों के विषय में बिहार राज्य के भूतपूर्व राज्यपाल आर. आर. दिवाकर ने कहा था, कि ये युवा बिना पते के पत्र है। वास्तव में आज के विद्यार्थी यानि कि युवा वर्ग ने अपने नैतिक मूल्यों को खो दिया है। मूल्य ह्रास के साथ-साथ आध्यात्मिक मूल्यों में भी कमी आयी है। वह अनेक बुराइयों में फँस चुका है। वह नशे का आदि हो चुका है।

आधुनिक मनुष्य भौतिकवादी हो गया है। भौतिकवादिता ने उसे कठोर बना दिया है। वह संवेदनहीन बन गया है। अत्याधिक भौतिकवादिता के कारण वह आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करने लगा है। आधुनिक मनुष्य केवल रोटी ही नहीं चाहता, बल्कि वह अधिक से अधिक भौतिक सुख-सुविधायें प्राप्त करना चाहता है। युवा ही देश का भविष्य होते है। देश की आशायें, उम्मीदें युवाओं पर ही निर्भर होती है। देश की प्रगति, परिवर्तन उन पर ही आधारित होता है। किसी भी देश का आकर्षण युवा ही होते हैं। किसी भी देश के युवाओं का समाज को स्वस्थ रखने का उत्तरदायित्व है। उसका फर्ज है कि वह समाज को नैतिक, सामाजिक और राजनैतिक रूप से प्रगति में अपना योगदान दें। समाज का भी ये उत्तरदायित्व बनता है कि समाज भी उनकी तरक्की में, उनके सपनों को पूरा करने में अपना योगदान दें। जिस समाज में वह रहता है, उस समाज के सांस्कृतिक नियम, रीतिरिवाज और सामाजिक मूल्यों का उसके जीवन पर प्रभाव पड़ता है। आधुनिक युवा पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित है। पश्चिमी देशों से भारतीय देशों की पारिवारिक व्यवस्था भिन्न है। आज का युवा पश्चिमी पारिवारिक व्यवस्था से प्रभावित होकर वह स्वतन्त्र रहना चाहता है, निजीपन चाहता है तथा परिवार से दूरी बनाये रखना चाहता है। संयुक्त परिवार प्रणाली एकल परिवार प्रणाली में परिवर्तित हो चुकी है। भारत में पश्चिमी सभ्यता तीव्र गति से अग्रसर है। मीडिया सैटेलाइट के द्वारा पूरे एशिया में अपनी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार कर रही है भारत भी उनका शिकार बन चुका है। पश्चिमी चैनलों का ही प्रभाव है कि वह कार्यक्रमों द्वारा हिंसा, अश्लीलता, सैक्स और भेदभाव मनोरंजन के नाम पर भारत में फैला रहे हैं। कुछ ही कार्यक्रम ऐसे होते हैं जो हमारे ज्ञान और शिक्षा बढ़ाने में सहायक होते हैं। हमारा फिल्म जगत ऐसी फिल्में बनाता था जो पूरी तरह भारतीय सभ्यता संस्कृति पर आधारित साफ सुथरी, ज्ञानवर्धक. और हर प्रकार से पूर्ण होती थी। पर आधुनिक फिल्मी जगत हॉलीवुड की नकल करके पश्चिमी सभ्यता पर आधारित फिल्मों को भारतीय परिवेश के अनुसार परिवर्तित करते हैं। वास्तव में इन फिल्मों की कहानियाँ हिंसा, गैंग युद्ध बलात्कार, और तस्करी पर आधारित होती हैं। मीडिया के प्रभाव के कारण ही ये पूरे देश में बड़े पैमाने पर फैल रहा है। युवाओं में अपराधीकरण की प्रवृत्ति दिनों दिन बढ़ती जा रही है। एक अनुमान के अनुसार आत्महत्या करने वालों में 55% 30 वर्ष से कम आयु के होते हैं। उसका सबसे बड़ा कारण मूल्यरहित पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का अन्धानुकरण हैं। आधुनिक विचारों से प्रभावित अधिकांश युवा पीढ़ी अच्छे संस्कारों से हीन है जिसका कारण आधुनिक शिक्षा व परिवेश है। जीवन के प्रति दृष्टिकोण भोगवादी बनता जा रहा है। वह ईश्वर की यथार्थ स्तुति, प्रार्थना व उपासना से पूरी तरह अनभिज्ञ है। युवावस्था में मनुष्य शरीर की शारीरिक व मानसिक समस्त शक्तियां अपने शिखर या चरम पर होती हैं वह असफलता मिलने पर शीघ्र ही निराश हो जाते है, मानसिक सन्तुलन खो देते हैं एवम् अपराधों की ओर प्रवृत्त होने लगते हैं। हमारी आन्तरिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। उच्च राजनीतिक शिखर पर विराजमान राजनीतिज्ञों और सरकारी कर्मचारियों में भ्रष्टाचार बड़े पैमाने पर पाया जाता है। नित नये घोटाले हमारे देश की व्यवस्था के खोखलेपन को दर्शाते है। बड़ी-बड़ी डिग्रियां हासिल करने के बाद भी गारन्टी नहीं होती, कि नौकरी अवश्य मिलेगी। नौकरी के लिए ऊँची पहुँच, सिफारिश और रिश्वत के लिए पैसे की जरूरत होती है। अन्यथा नौकरी के लिए अयोग्य साबित कर दिया जाता है। बेरोजगारी अथवा योग्यता के अनुसार कार्य न मिलना विद्यार्थियों में निराशा की भावना पैदा कर देता है।

युवाओं में फैशन की प्रवृत्ति भी एक अहम् भूमिका निभाती है। आज का युवा फैशन के पीछे पागल है। फैशन की प्रवृत्ति ने इस कदर पैर पसार लिए है कि उसके कपड़े दिनों दिन छोटे होते जा रहे हैं। उसके बालों के स्टाइल बदलते जा रहे हैं। लड़कियाँ विशेषकर पढ़ी लिखी लड़कियां इस ओर अधिक प्रवृत्त है। ये देखकर एक समाज सुधारक युवाओं के विषय में रुष्ट होकर कहते है-"ये हमारे युवाओं को क्या हो गया है ? वे अपने माता-पिता का अनादर करते है। वे कानूनों को भंग करते हैं। उनकी प्रवृत्ति जंगली हो चुकी है, वे गलियों में दंगे फसाद करता है। उसके नैतिक मूल्यों का पतन हो चुका है। वह ऐसे क्यों बन गये है ?"

युवा लड़के लड़कियां जो इंजीनियरिंग कॉलिज, मैडिकल कॉलिज, और विश्वविद्यालयों में पढ़ते हैं। वह सोचते हैं, कि धूम्रपान और शराब आधुनिकता के चिन्ह है। शराब एक सामाजिक अभिशाप है। समाज को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। माता-पिता, अभिवावक, अध्यापक और सरकार सभी को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। शराब के आदि हो चुके लोगों के लिए पुनर्वास, केन्द्र स्थापित किए जाने चाहिए और विशेष सलाहकार नियुक्त किए जाने चाहिए। विदेशी कम्पनियों को भारत में उद्योग स्थापित करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है वह भारतीयों को बेहतर रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। हम रोजगार के साथ-साथ पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति को भी अपना लेते है। हमारे विचार और आदर्श उनसे भिन्न है। इस बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि-"मैं नहीं चाहता-कि मेरे घर की दीवारों और खिड़कियों में संस्कृति सीमित रहे मैं चाहता हूँ कि यह संस्कृति स्वंतत्र रूप से मेरे घर में फैले पर मैं यह नहीं चाहता कि हमारी इस धरोहर को कोई पैरों के नीचे कुचले।

जो नैतिक और अध्यात्मिक मूल्य अस्तित्व में है यह लगातार मनुष्य को आध्यात्मिक और नैतिक रूप से दिवालिया बना देंगे।

"कुछ नहीं होगा अंधेरों को बुरा कहने से
अपने हिस्से का दिया खुद ही जलाना होगा"!!

पृष्ठ 1 का शेष- अथ मर्त्यो.....

योगदर्शन के चतुर्थपाद का नाम है-कैवल्य। कैवल्य शब्द भाव अर्थ में केवल से तद्धित में बनता है, जिसका अर्थ है-केवल-अकेला, कैवल्य-अकेलेपन, शुद्धता की स्थिति। योग सूत्रकार पतञ्जलि मुनि ने कैवल्य की परिभाषा देते हुए लिखा है-बुद्धि और पुरुष की शुद्धि, समता होने पर कैवल्य होता है।[1] (पुरुष के प्रयोजन को सिद्ध करने वाले) सत-रज, तम गुणों का स्वीकार्य को न करना या आत्मा का अपने स्वरूप में स्थित होना ही कैवल्य है।[2] इस परिभाषा पर गहराई से विचार करने पर प्रस्तुत चर्चा की पुष्टि होती है।

सत्संगी बन्धुओं! यह सारी चर्चा हमने अमृत को लेकर ही की थी। इन सत्संगों में हमने अमृत शब्द के साहित्य में मिलने वाले अर्थों पर जहां क्रमश: विचार किया है, वहां अमृत का जो एक पूर्ण अर्थ है-आत्मा, उस पर विशेष विचार किया जो कि एक अनुभूति का विषय है[3] तथा मानव-जीवन का आधारभूत लक्ष्य है। वस्तुत: अमृत शब्द के अनेक अर्थों में मूलभावना है, वह है-तीनों कालों में टिका रहना। जो जितना-जितना जिस अंश में टिका रहता है, वह उस दृष्टि से अमृत कहलाता है। इसीलिए ही यह कहा जाता है कि 'सत्येहि-अमृतमाश्रितम्' सच्चाई में ही टिकाव है, अत एव उसकी ही जीत होती है। हां, अब मधुर जी के गीत से आज की चर्चा का समापन करते हैं। हां अगले सत्संग में अमृत के असली अर्थ आत्मा पर कुछ विशेष विचार होगा।

छठा सत्संग

सर्वप्रथम मधुरशील जी ने अमृत की आज तक की चर्चा को सामने रखकर एक गीत प्रस्तुत किया, तदनन्तर महात्मा विवेकशील जी ने कहा-हमने अमृत की इस चर्चा पर विचार करते हुए यह अनुभव किया है, कि हमारे साहित्य में अमृत शब्द अनेक अर्थों में आता है। पर अमृत की पूरी रूप रेखा आत्मा पर ही चरितार्थ होती है। अत: आज के सत्संग में आत्मा पर अमृत शब्द की तरह ही विचार करेंगे। वैसे तो आत्मा के अस्तित्व और स्वरूप पर हम पहले ही विचार कर चुके हैं।

आत्मा शब्द अत् धातु से मनिण् प्रत्यय के मेल से बनता है। अत् धातु का अर्थ सदा गतिशील रहना, सदा रहना ही है। कोषों में आत्मा शब्द-शरीर, अन्त: करण, बुद्धि, स्वभाव, स्वरूप, सारतत्व, विचारशक्ति, साहस, शक्ति, पुत्र, अग्नि, वायु, सूर्य, जीवन तत्व, जीव, ईश्वर आदि अनेक अर्थों में दर्शाया गया है। इस पर प्रश्न हो सकता है कि जब आत्मा शब्द की धातु और प्रत्यय वाला अंश स्पष्ट है, पुन: इसके इतने सारे अर्थ कैसे निकल आए हैं ?

इसके लिए हमें सबसे पहले इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि जितने भी विशेष शब्द हैं, उनके प्रकरण के अनुरूप अनेक अर्थ होते हैं। अत: किसी शब्द के निश्चित अर्थ तक पहुंचने के लिए हमें प्रकरण, विषय, वक्ता के अभिप्राय आदि पर ध्यान देना चाहिए। शब्द के निश्चित अर्थ की खोज की दृष्टि से निरुक्तकार ने विशेष प्रयास किया है।

निरुक्त का विचार है कि सर्वप्रथम शब्द के प्रकरण और वाक्य पर विचार करना चाहिए। फिर उसके आधार पर शब्द की आकृति के अनुसार धातु-प्रत्यय और व्याकरण प्रक्रिया की परीक्षा की जाए। जहां धातु-प्रत्यय की आकृति और अर्थ से संगति लग जाए, वहां उनके आधार पर अर्थ का निर्णय कर लेना चाहिए। जैसे कि पढ़ने वाले को पाठक कहते हैं, यहां शब्द की आकृति धातु, प्रत्यय और अर्थ से मेल खाती है। जहां यह मिलान न जुड़े, वहां उस अर्थ को बताने वाली मिलती-जुलती धातु से शब्दार्थ की सिद्धि एवं विचार करना चाहिए। जैसे गौ शब्द जाने अर्थ वाली गम् या गा धातु से संगत किया जा सकता है, क्योंकि पाठक, पाचक शब्द की तरह यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। जहां मिलती-जुलती धातु भी हाथ न लगे, वहां उस प्रकरण वाले अर्थ को बनाने वाली धातु के किसी एक वर्ण का आकृति के किसी अंश से मेल खाने पर उससे उस शब्द का विश्लेषण करना चाहिए। जैसे कि द्वार (दरवाजा) में रोकने अर्थ वाली वृ धातु वृ > वार आकृति में कुछ अंश है और रोकना अर्थ मेल खाता है। हम शास्त्रों और व्यवहार में देखते हैं, कि कोई शब्द या उससे पुकारे जाने वाला पदार्थ विविध भावों तथा व्यवहारों से जुड़ा हुआ होता है।

1. सत्त्वपुरुषयो: शुद्धिसाम्ये कैवल्यमिति। 3, 55
2. पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसव: कैवल्यम्,
   स्वरूपप्रतिष्ठा वा चित्तिशक्तिरिति। 4, 34
3. तमेव धीरो विज्ञाय प्रज्ञां कुर्वीत ब्राह्मण:।
   नानुध्यायाद् बहून् शब्दान् वाचो विग्लापनं हितत॥ वृह. उप. 4,4,21
   समझदार उस को जान कर एक दृढ़ निश्चय बनाए, ज्यादा शब्द जाल में न उलझे, क्योंकि वह तो केवल वाणी का व्यायाम ही है।

योग, धन पुरन्धि व वाजों को प्राप्त कराते हैं

-ले० डा. अशोक आर्य १०४-शिप्रा जिला गाजियाबाद उ. प्र.

परमपिता परमात्मा हमें योग व धन प्राप्त कराते हैं। पुरन्धि की प्राप्ति भी हमारे वह पिता ही कराते हैं तथा वाजों को दिलाने वाले ही वह पिता ही है। इस तथ्य का प्रकाश यह मन्त्र इस प्रकार करता है :-

स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरन्ध्याम्।
गमद् वाजेभिरा स न:॥

ऋग्वेद १. ५. ३॥

वह पिता वरणीय वस्तुओं के इशान हैं, यह ज्ञान हमें इस सूक्त के दूसरे मन्त्र से मिलता है। इस बात को ही आगे बढ़ाते हुए यह मन्त्र तीन प्रकार के उपदेश करते हुए कह रहा है कि :-

१. जो पिता हमारे सब के लिए सदा स्मरणीय हैं, जिनके पास जा कर हम मित्र के समान व्यवहार करते हुए, उससे बहुत सा धन आदि पाने का यत्न करते हैं। हमारे वह प्रभु निश्चय ही हमें जो अप्राप्त वस्तुएं हैं, जिन वस्तुओं को हम अब तक प्राप्त नहीं कर पाए हैं तथा जिन्हें हम पाने की अभिलाषा करते हैं, जिन्हें पाने की हम इच्छा करते हैं, हमारे वह प्रभु इन वस्तुओं का योग करने वाले हैं। हम जिन वस्तुओं को पाने की कामना करते हैं किन्तु अब तक पा नहीं सके हैं, उन वस्तुओं को प्राप्त कराने वाले, योग कराने वाले, जोड़ने वाले हमारे यह प्रभु ही तो हैं। वह यह प्राप्तियां कराने वाले हमारे कार्य साधक हैं। यह सब सिद्धियां, यह सब उपलब्धियां, यह सब जोड़, यह सब योग, हम कैसे प्राप्त करते हैं? यह मन्त्र इस का उतर देते हुए कह रहा है कि यह सब हमें तब ही मिलता है, जब हम पर उस प्रभु की कृपा हो जाती है। स्पष्ट है कि प्रभु की कृपा के बिना हम कुछ भी पा नहीं सकते। अत: हम सदा प्रभु की कृपा, प्रभु की दया प्राप्त करने का यत्न करते हैं, प्रयास करते हैं ताकि हम मन वांछित वस्तुओं को प्राप्त कर सकें। जो वस्तुएं अब तक हमने प्राप्त नहीं की, उन्हें पाने का नाम ही जोड है, योग है। यह योग, यह जोड़ प्रभु की सहायता के बिना, प्रभु के आशीर्वाद के बिना हम प्राप्त नहीं कर सकते।

२. हमें धन प्राप्ति के लिए हमारे वह पिता सदा सहायक होते हैं। जितने प्रकार के भी धन हैं, उन सब को प्रभु ही विजय करते हैं, प्राप्त कराते हैं। जीव सदा अधिकतम धन पाना चाहता है किन्तु अनेक बार वह यत्न से भी इसे प्राप्त नहीं कर पाता। इस से स्पष्ट होता है कि जब तक प्रभु का आशीर्वाद नहीं मिल जाता, तब तक हम यह धन प्राप्त नहीं कर सकते। अत: सब प्रकार के धनों को विजय करने वाले, प्राप्त कराने वाले हमारे यह पिता ही हैं।

३. जो प्रभु सब प्रकार के धनों को प्राप्त कराने वाले हैं, वह प्रभु वेद के इस सूक्त के तीसरे मन्त्र के तीसरे भाग में बता रहा है कि वह प्रभु हमारा पालन करने वाले भी हैं। हमारे पालन के लिए, हमें स्वावलम्बी बनाने के लिए जहां धनों की आवश्यकता होती है, वहां उत्तम पालन के साथ ही साथ हमें पूर्ण बनाने वाली उत्तम बुद्धि की भी आवश्यकता होती है किन्तु उत्तम बुद्धि सात्विक भोजन के बिना, सात्विक अन्न के बिना नहीं मिल सकती। अत: प्रभु हमारे लिए उत्तम व सात्विक अन्न की व्यवस्था करके देता है ताकि हम पूर्ण व उत्तम बुद्धि के स्वामी बनकर उत्तम पालन के योग्य बन सकें।

जो उत्तम व सात्विक अन्नों का उपभोग किया जाता है तो हमारी बुद्धि भी सात्विक बनती है। जब बुद्धि में किसी प्रकार की बुराई नहीं होती, किसी प्रकार का छल-प्रपंच नहीं होता तो ऐसी बुद्धि को सात्विक बुद्धि कहते हैं। ऐसी सात्विक बुद्धि ही सब प्रकार के उत्तम धनों को प्राप्त कराती है। सात्विक बुद्धि के बिना जो धन नहीं मिल सकते, वह उत्तम धन इस सात्विक बुद्धि से ही मिलते हैं। इस का भाव यह है कि जो अब तक हमने प्राप्त नहीं किया था, वह सब हम ने इस सात्विक बुद्धि से, प्रभु के आशीर्वाद से पा लिया किन्तु जो पाया उस पर हम गर्व नहीं करते, उस पर हम अभिमान नहीं करते। हम इन सब उपलब्धियों का, इन प्राप्तियों का, इन सफलताओं का कारण उस पिता का, उस प्रभु का वरदान ही समझते हैं।

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में यज्ञशाला का उद्घाटन

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला में यज्ञशाला का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। धार्मिक प्रोग्राम में स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक दर्शनाचार्य रोजड़ (गुजरात) से आशीर्वाद देने हेतु विशेष रूप से पधारे। पुरोहित रणजीत आर्य द्वारा यज्ञ सम्पूर्ण करवाया जिसमें मुख्य यज्ञमान अरुण आर्य, बसन्त गोयल तथा भारत भूषण मैनन परिवार सहित शामिल हुए। विशेष मन्त्रों की आहुतियों से सम्पूर्ण विधि से यज्ञ सम्पूर्ण कराया गया। तत्पश्चात् आर्य समाज के प्रधान डा. सूर्यकान्त शोरी, आर्य स्कूल के प्रधान प्रेम कुमार बांसल, सचिव भारत मोदी, मैनेजर संजीव शोरी तथा प्रचार मन्त्री बांसल शोरी द्वारा फूल मालाओं से स्वामी जी का अभिनन्दन किया गया। प्रोग्राम में हरमेल सिंह जोशी, केवल जिन्दल, सुखमहिन्द्र सिंह संधु, महेश आर्य, सूरज मान, शिव कुमार बत्रा, सुखविन्द्र लाल, सतीश सिंधवानी, रामशरण दास गोयल, विजय आर्य, प्रिंसीपल नीलम शर्मा, डायरैक्टर एच. कुमार कौल, अनीता मित्तल, कालिज एल. बी. एस. स्टाफ, प्रिंसीपल रंजना मैनन व स्टाफ, गांधी आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल स्टाफ व विद्यार्थी तथा गांधी आर्य हाई स्कूल के स्टाफ व विद्यार्थी शामिल हुए। स्कूल मुख्याध्यापक राम कुमार सोबती ने शहर से आए गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। स्वामी आशुतोष जी ने यज्ञ की महानता, सुख दु:ख कर्मफल अनुसार, विद्यार्थी जीवन तथा वेद मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। प्रोग्राम को बसन्त शोरी ने भी सम्बोधित किया। यज्ञशाला निर्माण के सहयोगी अरुण आर्य, बसन्त गोयल, अरुण कुमार, मनु जिन्दल, भारत मोदी, सुखविन्द्र संधू, रामचन्द्र आर्य, प्रवीण कुमार, एच. कुमार कौल, नवदीप गर्ग, अंचल जैन, सन्तपाल गर्ग, प्रेम चन्द सिंगला, दिनेश साहौरिया को सम्मानित किया गया। भारत भूषण मैनन सदस्य आर्य विद्या परिषद पंजाब द्वारा आए मेहमानों व गणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद किया। शांति पाठ उपरान्त प्रसाद वितरण किया गया।

-राम कुमार सोबती (प्रिंसीपल)

श्रीमती सुशीला भगत जी पांचवीं बार प्रधाना चुनी गईं

स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर का वार्षिक चुनाव पिछले दिनों सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से श्रीमती सुशीला भगत जी स्त्री आर्य समाज की पांचवीं बार प्रधाना चुनी गई। प्रधाना जी को दिए गए प्रदत्त अधिकार के आधार पर उन्होंने श्रीमती रजनी सेठी और प्रोमिला अरोड़ा जी को स्त्री आर्य समाज की मंत्राणी, श्रीमती दमयन्ती सेठी जी को कोषाध्यक्ष, श्री रश्मि घई जी को प्रचार मन्त्री मनोनीत किया। एक अन्य प्रस्ताव में उन्हें आर्य समाज की अन्तरंग सदस्यों की घोषणा करने का भी अधिकार दिया गया।

इससे पूर्व स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन की यज्ञशाला में हवन यज्ञ किया गया जिसमें उपस्थित सभी बहनों ने वैदिक मंत्रों की आहुतियां दी। इसके बाद स्त्री आर्य समाज की वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई गई जिसमें सभी बहनों ने प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

पृष्ठ 4 का शेष- वेद विज्ञान.....

अगले मन्त्र में बताया गया है पवन अत्यन्त बलवान होता है। जैसे सिंह हाथी और मनुष्यादि प्राणी बलवान होते हैं वैसे वायु भी हैं। जैसे सूर्य की किरणें पवित्र करने वाली हैं वैसे वायु भी हैं। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि इनके गुणों को जानकर यथायोग्य प्रयोग करें।

वात आ वातु भेषजं शम्भुमयोभु नो हृदे।
प्रण आयूंषि तारिषत।

ऋ 1. 186.1

वायु हमारे हृदय के लिए कल्याण कारक है, आनन्द दायक है। यह वायु हमारी आयु को बढ़ाता है।

उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा।
स नो जीवातवे कृधि।

ऋ . 1.186.2

यह वायु हमारा पितृवत् पालक, बन्धुवत् धारक पोषक और मित्र वत् सुखकर्ता है, हमें जीवन देता हैं।

द्वाविभौ वात आ सिन्धोटा परावतः।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः। ऋ . 1.137.2

प्रत्यक्ष भूत वायु सिन्धु पर्यन्त और उसके दूर के प्रदेश पर्यन्त बहती है। हे मनुष्य। एक तो तेरे लिए बल को प्राप्त कराती है और दूसरी खराबी को दूर फैंकती हैं।

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की गतिविधियां

स्त्री आर्य समाज में आस्था के साथ चल रहा प्रत्येक पर्व बड़ी श्रद्धा से मनाया जाता है। प्रत्येक महिला सम्मेलन में भी भाग अवश्य लेती हैं। राम नवमी पर्व बड़े स्तर पर सबने मिलकर मनाया। शिवरात्रि, महर्षि का जन्म दिन सब बहनें बड़ी श्रद्धा से उनका गुणगान करके मनाती हैं, दण्डी स्वामी सिविल लाईन यज्ञ समिति का सत्संग भी बहुत अच्छी तरह नलिन शर्मा, राजेश खन्ना आदि के सहयोग से चल रहा है जिसमें स्त्री आर्य समाज की प्रधाना इन्द्रा शर्मा, मन्त्राणी जनक रानी लगातार उपस्थित रहती है। रविवार 19 को 103 ग्रीनपार्क में यज्ञ था 26 को 114 नंबर में। अब रविवार 110 नंबर में इस प्रकार क्रमश: यज्ञ का कार्यक्रम चल रहा है।

स्त्री समाज सदा गरीब लड़कियों की शादी में सहायता करती रहती है। ज़रूरतमंद बीमार की यथा शक्ति मदद करती है। परोपकार को ही अपना लक्ष्य मान कर स्त्री आर्य समाज काम करती है।

कुछ विचार जो सदा सत्य हैं।

1. विवेक ही भवसागर से तरने की नौका है। पहले सही ज्ञान अर्जित करो, फिर ज्ञान पूर्वक कर्म करो फिर प्रभु की नज़दीकी पाओ।

2. मर्यादा में रहो कर्त्तव्य कर्म पूरा करो। यश-अपयश विधाता के हाथ हैं ऐसा सोच कर अन्दर की शान्ति बनाए रखो, क्रोध से बचो उससे विवेक नष्ट होता है।

3. प्रसन्नचित व्यक्ति अधिक सुखी होते हैं, निराशा मूर्खता का परिणाम है इससे बचो, चरित्र एक वृक्ष है, प्रतिष्ठा उसकी छाया ओर सम्मान उसका इनाम।

4. मौन के वृक्ष पर शान्ति के फल लगते हैं, सफाई और मेहनत मनुष्य के मित्र तथा वैद्य है।

5. जब तक हृदय पवित्र नहीं भक्ति नहीं हो सकती, श्रद्धा भक्ति की पहली सीढ़ी है, संतोष दूसरी सीढ़ी, सरलता तीसरी सीढ़ी जहां भक्त ने चलाकी दिखाई वही प्रभु से दूरी पाई।

6. सत्य और मीठा बोलो। उत्तेजना में मत बोलो। संसार में बुरे विचार बार-बार उठते हैं उनसे हर समय सावधान रहो, अन्यायकारी से मत डरो, अपने जैसा व्यवहार दूसरों से करो।

7. एक दूसरे को साथ लेकर ईश्वर के रास्ते पर बढ़ते चलो। अच्छे साधक के पास जाने से मन की अशान्ति भाग जाती है। परमात्मा की थोड़ी सी भक्ति भक्त को उत्थान की ओर ले जाती है, प्रभु से मित्रता करने वाला कभी नष्ट नहीं होता। जो लोग अपने पर काबू रखते हैं उन्हें ईश्वर निहाल कर देता है।

8. ईश्वर विश्वासी साधन कम होने पर भी सुखी रहता है। जिनका प्रभु सहेला है वह परोपकारी होता है, प्रभु मिलन के लिए शुद्ध मन होकर हृदय में मिलन की प्यास लेकर अबोध बालक बन कर जाएं।

9. सूक्ष्म वस्तु महान होती है। प्रभु भी सूक्ष्म, आत्मा भी सूक्ष्म बड़े प्रेम से ही मिलाप होता है, जैसे रेत में कपड़ा रख कर साबुन लगाओ सफाई नहीं होगी। ऐसे मैले मन में प्रभु प्रेम नहीं ठहरेगा। इसलिए सुकर्म करो, सत्य बोलो।

10. ऐ मानव तू सोच जहां तेरा असली ठिकाना कहां है ? तू कहां से आया है और कहां जाना है। प्रार्थना एक ही करो। भगवान मैं तो तेरा बंदा हूं तुझे ही चाहता हूं तू ही चाहने योग्य है। मनुष्य दु:ख के समय भी इन्सानियत को न छोड़े फिर धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा।

जो वेद की शरण में आता है उसकी आज्ञा मानता है। वेद कहता है मैं तुझे सब वैभव दूंगा। धन, स्वस्थ, भक्ति, प्रभु प्रेम सब कुछ देकर परलोक का ज्ञान भी दूंगा, वेद प्रकाश ही प्रकाश है, जो अपने प्रकाश से सत्य प्रकाशित कर रहा है। वेद ज्ञान ही ज्ञान है। वेद मन्त्रों की ध्वनि मन को तरंगित करके आनन्द देती है।

-जनक रानी मन्त्राणी

वेद वाणी

यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥

विनय–हम किसी भी घटना से, किसी भी स्थान में, किसी भी काल में क्यों डरते हैं ? वास्तव में डरने का कहीं भी कोई कारण नहीं है। फिर भी हे परमेश्वर ! हम इसलिए डरते हैं क्योंकि हम तुम्हें भूल जाते हैं, क्योंकि सदा हम सर्वत्र सब घटनाओं में तुम्हारा हाथ नहीं देखते। यदि हम संसार की सब घटनाओं को तुम्हारा 'संचेष्टित' देखें, तुम द्वारा की गई, तुम द्वारा सम्यक्तया की गई देखें तो हम कभी भी भयभीत न हों। तुम तो परम मंगलकारी हो, सम्यक् ही चेष्टा करने वाले हो, सदा सबका कल्याण ही करने वाले हो। इसलिए हे प्रभो ! तुम जहाँ–जहाँ से चेष्टा करते हो, जिस–जिस स्थान, काल कारण व कर्म से अपना संचेष्टन करते हो वहाँ–वहाँ से हमें बिलकुल निर्भयता ला दो। पर तुम कहाँ संचेष्टन नहीं कर रहे हो ? तुम किस जगह नहीं जाग रहे हो ? ओह, यदि हम संसारी मनुष्य इतना अनुभव करें तो इस संसार में हमारे लिए अभय ही अभय हो जाय। इस संसार में सुख, सौहार्द, प्रेम और निर्भयता का राज्य हो जाय। वहीं कोई निर्बल को न सतावे, कभी कोई मूक पशुओं पर भी हाथ न उठाए। तब न केवल सब प्रजाएँ सुख–शान्ति पाएँ, न केवल बालक आदि सब मनुष्य–प्राणी क्षेम मनाएँ, किन्तु संसार की आगे आने वाली संततियाँ भी कल्याण को प्राप्त करें तथा सब पशु–पक्षी भी इस बृहत् प्राणी–परिवार के अंग होते हुए निर्भय होकर इस पृथिवी पर विचरें। इस समय जो यह संसार स्वार्थान्ध होकर गरीबों को नाना प्रकार से सता रहा है, अपने भोग–विलास के लिए प्रतिदिन असंख्य पशुओं को काट रहा है–यह सब घोर अनर्थ तब शान्त हो जाय। सब पाप–अन्याय समाप्त हो जायँ। प्रभो ! हे जगदीश्वर ! तुम ऐसी ही कृपा करो। हम सब प्राणी सदा सर्वत्र तुम्हारे ही 'समीहन' को अनुभव करें, तुम ऐसी ही कृपा करो। हमारी प्रजाओं के लिए तुम ऐसा ही 'शं' कर दो, हमारे पशुओं के लिए भी तुम ऐसा ही परिपूर्ण 'अभय' कर दो।

–साभार वैदिक विनय प्रस्तुतिः रणजीत आर्य

आर्य समाज बरनाला का वर्ष 2013-14 का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज बरनाला का वार्षिक चुनाव दिनांक 19–5–13 को श्री भारत भूषण मैनन की प्रधानगी में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम श्री सुखविन्द्र लाल मारकण्डा ने वर्ष 2012–13 का आय–व्यय का विवरण पेश किया जो सभी उपस्थित सभासदों द्वारा सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। तत्पश्चात् प्रधान डॉ० सूर्यकान्त शोरी ने वार्षिक रिपोर्ट सभा में पेश की। उनके कार्य, व्यवहार एवं योगदान की प्रशंसा करते हुए सभासदों द्वारा करतल ध्वनि से पारित कर दिया गया। आदरणीय भारत भूषण मैनन जी ने आगामी वर्ष के लिए डॉ० सूर्यकान्त शोरी का नाम प्रधान पद के लिए पेश किया। उपस्थित सभासदों ने प्रसन्नतापूर्वक सर्वसम्मति से पारित कर दिया तथा नव–नियुक्त प्रधान डॉ० सूर्यकान्त शोरी को अपनी कार्यकारिणी गठित करने के लिए अधिकार दे दिया गया। प्रधान डॉ० सूर्यकान्त शोरी ने अपनी कार्यकारिणी का गठन इस प्रकार किया–

श्री हरमेल सिंह जोशी (उप–प्रधान), श्री भारत भूषण मैनन (उप–प्रधान), तिलक राम (मंत्री), श्री सुखविन्द्र लाल (कोषाध्यक्ष), श्री राम चन्द्र आर्य (अधि० आर्य वीर दल), श्री शिव कुमार बत्रा (पुस्तकालयाध्यक्ष), श्री बसन्त शोरी (वेद प्रचार मंत्री)।

सदस्यगण–श्री केवल जिन्दल, श्री भारत मोदी, श्री राजेश गांधी, श्री राम कुमार सोबती, श्री सूरज मान गर्ग। तत्पश्चात् श्री मैनन जी ने सभासदों का धन्यवाद करते हुए आर्य समाज बरनाला की भूरि–भूरि प्रशंसा की। शांति पाठ के साथ सभा की कार्यवाही को विराम दिया गया।

–तिलक राम मंत्री आर्य समाज, बरनाला

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली–6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।